अध्याय - 3

पांडेय नर्मदेश्वर सहाय

बक्सर जिला के कुल्हड़िया गाँव में 3 मार्च 1911 ई० के पांडेय बेणी माधव सहाय के पुत्र रूप में जनमल पांडेय नर्मदेश्वर सहाय हिंदी आ भोजपुरी के ख्यातिलब्ध कवि, कथाकार, निबंधकार आ सफल संपादक रहीं। पटना सिविल कोर्ट में वकालत के क्षेत्रों में महारत हासिल कइला के बादो इहाँ के सहित्य सृजन जारी रखलीं। पटना से प्रकाशित 'अंजोर' पत्रिका के सफल संपादन क के सहाय जी अपना संपादन कला के परिचय देहनी। पटना में अपना आवास के भोजपुरी परिवार नामक संस्था के कार्यालय बना के भोजपुरी साहित्यकारन के लेखन खातिर बहुते प्रोत्साहित कइलीं। एह संस्था के माधयम के सहाय जी भोजपुरी आंदोलन के काफी बल देहनी। इहाँ के लिखल गीत, कविता, गजल, कहानी आ निबंध विभिन्न पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित भइल। इहाँ के भोजपुरी के कबनो स्वतंत्र संग्रह प्रकाशित ना हो सकल तबो भोजपुरी के विकास में सहाय जी के महत्त्वपूर्ण योगदान रहल बा।

सहाय जी के रचना में सामाजिक यथार्थ के मार्मिक चित्रण मिलेला। सांप्रदायिक सद्‌भावना, सामजिक एकता आ मानवीय संवेदना के स्वर इहाँ के साहित्य में प्रमुखता से सुनाई पड़ेला। अंतत: सहाय जी भोजपुरी के समर्पित साहित्यकारन में से एक रहीं, जेकर भोजपुरी के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहल बा।

विषय प्रवेश

'हरताल' कहानी में सदियन से सतावल वर्ग के जागरण के स्वर सुनाता। ई एह कहानी से ई पता चलता कि समाज में सब केहू के चाहे ऊ अमीर होखे, चाहे गरीब-सबाका से एह कहानी के भाषा प्रवाहपूर्ण बा। आदमी के सांस्कृतिक मूल्यन के जरिये एक कहानी के ताना-बाना बिनाइल बा।

हरताल

मेवा बो का जबसे बगसर के मुरूदघट्टी के ठीक दस हजार में लिआइल हा, तब से उनुका घरे आवे के सँवसे नइखे मिलत। मेवा का पियरी भइल बा। घर-घाट दूनो मेवें बो का देखे के परता। घर में छोटकी पतोहिया रसोई-पानी करेले। बीतला जेठ में ओकर गवना भइल हा। ऊ सुभाव से नीमन, देह-जाँगर से सुन्नर, काम करे में गाँव ऊपर ह।

ओह दिन बड़ा बरखा बरिसल। फजिरहीं से अइसन बूनी परे लागल कि बाहर निकसल मोसकिल रहे। दुपहरिया में मेवा बो कसहूँ घाट से अइली। घर में एको चिरूआ पीये के पानी ना रहे। चुहानी के दुआरी पर खलिहा गगरा ढनढनात रहे। मेवा बो छोटकी पतोहि के कहली जे जो गोंयड़े के बाबू साहेब के कुँआ पर से हाली से एक गगरा पानी लेले आउ।

छोटकी का पानी ले आवे में बड़ा देरी भइल। मेवा बो कुँआ का ओर अपने चलली। बउलिये पर छोटकी से भेंट भ गइल। ओकरा के देखते मेवा बो आपा से बाहर हो गइली। चट पूछि बइठली, ''काहें सिसुकति आवतारिस रे ? का भइल हा ? गगरवो नइखीं देखत! बोलत काहे नइखिस ?''

अतना सुनला पर छोटकी घूघ उठा के कुछु बोलहीं के चाहति रहे कि मेवा बो बमक उठली, ''तनी अउरी घूघ त उठाउ। आरे राम! ई पाँचो अँगुरी के दाग गाल पर! कवन मरकी लगवना हाथ छोड़लस हा रे ? अँचरवो जहाँ-जहाँ दरकल बा। ई कवना के काम ह ? जल्दी बोल ओकरा के काली के दे दीं ?''

''बाबूसाहेब के कुँआ पर पानी भरत रहली हाँ। उनुकर छोटका बेटा आइ के गलथोथरी करे लागल। बाते-बाते में बलाते हाथ धइ पउदरि में खींचि ले गइल।'' -अतना कहि के छोटकी फफकि-फफकि के रोए लागलि।

मेवाबो के मुँह लाल हो गइल। कहली, 'चुप रहु, हम बूझि गइलीं। आछा त हम बचऊ के सिखा देतानी। रसरी जरि गइल, बाकि अँइठन ना मेटल। जमीन्दारी गइल, घर के खेत-बारी

बिकाइल, तबो नवाबी ना गइल। अब हमनी के इज्जति-पानी लेबे पर परल बाड़न स। का गाँव रहे, का हो गइल। अइसन लउठई त सुनबे ना कइलीं। केहू के बेटी-पतोहि पर केहू नजरि ना उठावत रहे। एह से त सहरिए नीमन बा। नू केहू के लेबे के, नू केहू के देबे के। अपना-अपना घर में सभ केहू मोट-मेंही खाता आ परल बा।'

सेवा बो घरे आके अपना मरद से कहली कि चालिस-पचास गो रोपेया लेके थाना त चल। अब गाँव में रहल मोसकिल बा। मेवा बहुत तरह से समुझवले। कहले कि अइसन काम जनि कर। ऊ लोग बड़ा ह। ओह लोगन का संगे कई पुहुति बीति गइल। जाये द जे भइल, से भइल। हमनी के पुरूखो-पुरनियाँ ढेर घोंटले हवे। तूँहूँ घोंट घाल। मेवा बो ना मनली। थाना जाइके मोकदिमा कइ दिहली। मेवा सुनले त कहले कि ई नीक ना कइलू हा। पतोहि के भरला इजलासे चढ़इबु।

''ना चढ़ाइ त का करीं।'' -मेवा बो चट दे बोल उठली-''छोट के इज्जति कइसे बाँची। चानी का कटोरा में दूध-भात खायेवाला बबुआ के लाल घर में लोहा के कटोरा में वे-हरदी के खिंचड़ी ना खिअवनी, त हम असल बाप के बेटी ना। नीक घरे नेवता देले बाड़न।''

गाँव में आजु बड़ा हलचल मचल बा। जब से बिनोवाजी गाँवे अइले राड़नि के दिमागे नइखे मिलत। सनातन से लतिआवल गइल जाति के लोग आजु बरोबरी के दावा करता। अब त हरिजन बनि के मन्दिरो में जाये के आ बड़ जाति के कुँआ प नहाये के हुकुम मिलि गइल। गाँव के बड़ कहाएवाला लोग के बटोर रहे। बाबूसाहब सुरू कइले, ''रावा सभे जे कहीं, हम त राड़नि के माथ पर ना बइठा सकीं। जिनिगी भर पनही के नीचे रहल लोग। अब ना रही लोग, त ठीक ना होई! केहू का धन होखो। सरकार माथा पर चढ़ाओ। हमनी का ई बरदास के बाहर बा।''

बटोर में के एगो बूढ़ लालाजी बोलि उठले, ''समइये अइसन आइ गइल बा ए बाबूसाहेब! देखीं, दुनिया कहाँ-से-कहाँ चलि गइलि। आखिर उन्हनिओं का त....।''

''अनेरे बक-बक कइले बाड़, चुप ना रहा।'' -केहू चढ़ि बइठल। गाँधी टोपी पहिरले एगो नवही कुछ बोलल चाहल कि पहिलहीं बाबूसाहेब बोलि उठले, ''एह लोग के अन्हेर त हमरा से ना सहाई। ना मनिहें लोग त चिरइनि के खोंता निअर उजारि फेंकबि। परसँवे के बात ह। मेवा डोम के पतोहि हमरा कुँआ से पानी भरि के ले गइली। हमार छोटका हरी, ओइजे खड़ा रहे। कुछु ना बोलल। जेह कुँआ पर ब्राह्मण देवता छोड़ि के दोसर केहू ना चढ़त रहे, वोही कुँआ के ऊ पानी भरि ले गइली। जेह मन्दिर में बाप-दादा पूजा कइले ओही में डोम-चमार घुसिहें। हम त ई ना होखे देबि। ना रास्ता पर अइहें लोग, त खने-खराब कइ देबि।''

पंचइती का बटोर में बइठल गाँधी टोपीवाला भाई के बोले के मोका मिलल ''बाबूसाहेब! आँखि खोलीं। दुनिया देखीं। बड़का-बड़का ओहदा पर ई लोग रखाता। कौंसिल-कचहरी में इन्हनी लोग के मान बढ़ता। अपने के अंचल अधिकारी, जिनिका के झुकि-झुकि के रउरा सलाम करीले आ 'सरकार-सरकार' कहीले, ऊहो बिहिया का लगे के हरिजन हवे। ई लोग हमरे समाज के ह। हमार-राउर भाई ह। जाति-पाँति के बखेड़ा छोड़ी। अपने के गाँव में सबसे बड़ हई। सब पर छोह देखावे के चाहीं।

''कुछुओ होखो। आपन विचार हम ना छोड़बि।'' बाबू साहेब तूरि के जवाब देले।

बाबूसाहेब अपना बइठका में खटिया पर परल रहले। एगो पुलिस के आवत देखि के उनुकर कान खाड़ा हो गइल। पुलिस का अइला पर मालूम भलहिन कि मेवा डोम के पतोहि के बेइजति कइला के इलजाम में थाना से उनुका छोटका बेटा हरी के नाँवे नोटिस आइल बा। सुनते मातर बाबूसाहेब के होस उड़ि गइल। पुलिस के जथा-जोग सेवा-सतकार कइके बिदा कइले। बेटा के थाना पर हाजिर करे खातिर जमानत दे दिहले।

सिपाही का गइला पर बाबूसाहेब सीधे हरिजन टोली पहुँचले। मेवा कीहाँ सतनारायन स्वामी के कथा होत रहे। देखि के जरि बुतइले, बाकी का करसु। मसक्का में परल रहले। देखते मेवा सलाम कइलसि। बाबूसाहेब बोलले, ''का मेवा, ईहे उचित ह ? जे आजुले ना भइल, ऊ तोहन लोग करे जातार।''

मेवा कहले, ''का करींजा सरकार, अइसन जुलुमो कबो छोटनि पर ना भइल रहल हा।''

''का जुलुम भइल हा ? तोहरा पतोहि के कम दोस बा ?''

''ओकर त कबनो दोस नइखे, सरकार! बड़ होके रावाँ बोलतानी त का रउरा मुँहे लागीं।''

''काहें ना मुँहे लागबि जा?'' - मेवा बो टनकारे बोली में बोलि उठलि- ''काल्हुए के आइलि कनिया बहुरिया के ई दुरदसा!''

बाबूसाहेब दाँत चियारि के मेवा बो के चिरउरी करे लगले, ''जाये द लोग। हरी तोहनिओं लोग के लइका ह।''

अतना सुनि के मेवा कहले - ''जाये दीं, जब रउआ अइसे कहतानी, त मोकदिमा ना चली। बाकी रउरो बेटी-बहूबा, सबके एके नजर देखे के चाही।''

बाबूसाहेब का घरे डकइती हो गइल। थाना में जाके मेवा समेत ढेरि हरिजनन के नाँव लिखवा दिहले। ऊ सब बेकसूर रह स। पुलिस दरोगा आइल आ डाँड़ में रस्सा लगाके उन्हनी के पकड़ के ले गइल।

भोरे पहर मेवा बो बाबू साहेब कीहाँ पहुँचलि। कहलसि–''का सरकार, नेकी के ईहे बदला ? हमनीका डकइती काहें करबि ? अन–धन केकरो से माँगे के हमरा नइखे। रोज दस रूपिया के आमदनी घाट से बा। ई रउआ का कइली हाँ। बर–बरिआति में रउआ सब घर–दुआर हमनियें पर छोड़ि के जाई ले। आजु अइसन बिसवासघात! हमनीं का कतहूँ के ना रहलीं।'' कहि के मेवा बो रोये लागलि।

बाबूसाहेब तनिको ना पसीजले। मने–मने खुस हो के बोलले– ''ओह दिन त तनी छवड़ा तोहरा पतोहि के पानी भरे से मना कइलस, त खन्दान भरि के पारा चढ़ि गइल। हमरा के बेइज्जति करे के फेरा में लागल रहलू। अब देख, हम का करतानी। थानेदार कीहाँ त पैरवी करे आवते बा। जवान बेटी–पतोहि बड़ले बड़हू। जा–जा पेरवी कइ ल।''

मेवा बो बोलि उठलि, ''अइसे काहें कहतानी, मालिक! जरला पर नीमक जनि छिरिकीं। आछा, जातानी, बाकी भगवान एकर निसाफ करिहें।''

पैरवी कइके बाबूसाहेब डोमन के सजाइ करवा दीहले। नतीजा भइल कि कुल्हि डोम हरताल कइ दिहले। कतहूँ केहू हरिजन काम पर जाते नइखे।

वोही दिन बाबूसाहेब के पिताजी के सरगवास हो गइल। बड़ा पुरनियाँ रहलीं ऊहाँ का। बड़ा घूमघाम से रंथी घाट पर पहुँचल। चनन के चिता पर पितम्मरी ओढ़ा के ऊहाँ के सुतावल रहे। पुरोहित जी तिल, अछत, दहो मुँह में दीहलें। भइलि कि चिता में अगि लगावल जाउ।

केहू आगि नइखे लगावति। बाबूसाहेब कहले,– ''का देरी बा?''

सभे चुप रहे।

पंडितजी बोलले, ''सरकार, आगि के लगावो। अगिनि–दान जब घाट के चउधरी दीही, तबे नू आग दिआई, तबे नू मृत आत्मा के सद्गति होई।''

''हँ, हँ, त बोलाव लोग जी, काहाँ बाड़े स?'' बाबूसाहेब आपना भाई–गोतिया लोग के ओर ताकि के फरमवले।

3

''कुल्हि डोम त हरताल कइले बाड़े स। डकइतीवाला मोकदिमा के काल्हुए नूँ फसिला भइल हा।'' –जमाति में से केहू बोलि उठल।

बाबूसाहेब के जाड़ा में पसेना छूटे लागल। एहिजा उनुकर सब चालबाजी भुला गइल।

सामने चन्दन के चिता पर से बुझाइल जइसे उनुकर पिताजी कहन होखसु, ''बेटा! तूँ मेवा के जेहल में बन करववल, मेवा आजु तोहरा पितरन के सरग के दुआरी बन्न करवा दिहलसि। मेवा के जेल का भेजववल सरग से खींचि के अपना पितरन के नरक में ढकेल दिहल।''

अभ्यास

(1) मेवा बो के घरे जाए के समय काहे ना मिलत रहे ?

(2) कवना बात पर मेवा बो के मुंह क्रोध से लाल हो गइल ?

(3) ''केहू का बेटी पतोहि पर केहू नजर ना उठावत रहे'' ई कथन केकर ह आ कवना प्रसंग के कहल गइल बा।

(4) ''रउआ सभे जे कहीं, हम त राड़न के माथ पर ना बइठा सकीं।'' ई बात के कहले बा ? प्रसंगो बताई ।

(5) गाँव के बड़का लोग के बटोर काहे खातिर भइल रहे।

(6) बाबू साहेब मेवा आ उन्हुका मेहरारू के सामने काहे झुक के बातिआवे लगलन ?

(7) बाबू साहेब मेवा के डकैती के केस में काहे फँसवलन ?

(8) मेवा बो के गिड़गिड़इला पर बाबू सहेब का जबाव देलन ?

(9) बाबू साहेब के जाड़ा में पसीना काहे छूटे लागल ?

(10) डोमन के हरताल कइला के का प्रभाव पड़ल ?

(11) एह कहानी के का उद्देश्य बा ?

मुहावरा

बमक उठल	– क्रोधित भइल
मुँह लाल भइल	– क्रोधपूर्ण आवेश में आइल
लाल घर में भेजल	– जेल में भेजल
बेहाड़ी के खिचड़ी खिआवल	– जेल के भोजन करावल
नीक घरे नेवता दिहल	– प्रतिकार करेवाला के ललकारल
पनही के नीचे रहल	– अत्याचार सहल
माथा पर चढ़ावल	– मनोबल बढ़ावल
कान खड़ा भइल	– परिस्थिति पर ध्यान गइल
पारा चढ़ल	– क्रोधित भइल
रसरी जल गइल, बाकि अइठन ना मेटल	– सब कुछ समाप्त भइला के बादो अहंकार ना गइल
जरला पर नमक छिरिकल	– पीड़ा के अउर बढ़ावल
पसीना छूटल	– परेशानी बढ़ल

शब्द-संपदा

मुरूदघटी – श्मशान घाट

पिअरी – लीवर खराब भइला से उत्पन्न रोग, जवना में शरीर पिअर आ कमजोर हो जाला, जौंडिस

सुन्नर – सुंदर

फजिरही – भोरही

मोसकिल – कठिन

चिरूआ – अँजुरी

चुहानी – भोजन बनावे वाला घर

खलिहा	–	खाली
हाली	–	जल्दी
सिसुकत	–	मुँह दबा के रोवत
घूघ	–	घुंघट
दरकल	–	मसकल
गलथेथरी	–	बेमतलब के बात, तर्कहीन बात
पुरूखा	–	पूर्वज
परसँवे	–	परसो
इलजाम	–	आरोप
डाँड़ा में रस्सा लगावल	–	जेल जाए से पहिले आरोपी डोड़ में रस्सा बाँह के जेल भेजल जात रहे।
पितर	–	पूर्वज